Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ कोकिला व्रत पूजा विधि ॥

॥ जय कोकिला देवी ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ संकल्प और सामग्री ॥

१. तिथि देखें

अपने नगर के पंचांग में आषाढ़ पूर्णिमा की तिथि देखें। क्षेत्रीय रीति में यदि अधिक मास या मास भर के व्रत का विधान हो तो आरंभ और समापन की तिथियाँ उसी के अनुसार तय करें।

२. पूजा सामग्री

स्वच्छ चौकी, कपड़ा, देवी गौरी या शिव-पार्वती का चित्र, तिल या तिल की छोटी कोयल आकृति, जल, अक्षत, फूल, दूब यदि उपलब्ध हो, चंदन, धूप, दीप, फल और सात्त्विक नैवेद्य रखें। तिल और चावल का प्रसाद भी कुछ घरों में बनता है।

३. स्नान और संकल्प

स्वच्छ होकर पूजा स्थान सजाएँ। देवी का स्मरण करके अपनी क्षमता से व्रत और पूजा का संकल्प लें। चित्र के सामने जल प्रतीक रूप में अर्पित करें। मन में परिवार के कल्याण, मधुर वाणी और अच्छे आचरण की प्रार्थना रखें।

विस्तृत कथा में अलग-अलग दिनों के स्नान में जड़ी-बूटियों के लेप का उल्लेख है। त्वचा पर अनजानी सामग्री लगाने की आवश्यकता नहीं; स्वच्छ जल से साधारण स्नान पर्याप्त रखा जा सकता है।

॥ कोकिला का प्रतीक पूजन ॥

४. अर्पण

तिल की आकृति या चित्र को स्वच्छ पात्र में रखें। पुष्प, अक्षत, दूब, दीप और उपलब्ध नैवेद्य अर्पित करें। देवी गौरी और शिव का स्मरण करें। तिल की आकृति न बन सके तो चित्र के सामने तिल रखकर भी प्रतीकात्मक पूजा करें।

५. कथा और प्रार्थना

वसिष्ठ-कीर्तिमाला की कथा या अपने घर में प्रचलित सती-कोकिला कथा सुनें। अपनी भाषा में शांति, सम्मान और परिवार के मंगल की प्रार्थना करें। फिर आरती और प्रसाद बाँटें।

६. समापन और दान

एक दिन की पूजा हो तो उसी दिन घर की रीति से समापन करें। मासिक संकल्प हो तो तय अवधि पूरी होने पर पूजा और अपनी क्षमता से अन्न या वस्त्र दान करें। प्रतीकात्मक आकृति का स्वच्छ तथा पर्यावरण अनुकूल निपटान करें।

पूजा में जीवित पक्षी की जरूरत नहीं है। दीप की निगरानी करें और खुले जल स्रोत में प्लास्टिक या रंगीन सजावट न डालें।

॥ जय कोकिला देवी ॥